Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(*https://jetjournal.us/*)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

भारतीय इतिहास में नारी : एक दृष्टीक्षेप

डॉ. अमोल प्रकाश पाटील, (इतिहास विभाग प्रमुख), झेड. बी. पाटील महाविद्यालय, धुले तहसील एवं जिला. धुले (महाराष्ट्र - भारत)

प्रस्तावना

समाज में विकास के स्तर को जानने के लिये सर्वप्रथम नारी की स्थिति का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। भारतीय नारी की पहचान भी कई वर्ग समूहों, विभिन्न जाति समूहों, धार्मिक और सांस्कृतिक समूहों में होती है। भारतीय समाज में नारी को सृष्टि का प्रमुख आधार माना गया है। गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा था कि जब एक बच्ची जन्म लेती है तो वह साबित करती है कि ईश्वर अभी मानव जाति से नाराज नहीं है। वहीं थामस फुलर का कथन है कि, 'मेरा बेटा तभी तक मेरा बेटा है जब तक उसकी पत्नी नहीं आ जाती, परन्तु मेरी बेटी ताउम्र बेटी रहेगी।' फिर भी समाज में नारी की स्थिति सदैव एक-सी नहीं रही समयान्तराल में उनमें अनेक परिवर्तन हुये। प्राचीन में भारतीय समाज में उनका सम्मान और आदर आदर्शात्मक और मर्यादायुक्त रहा। कन्या के रूप में, पत्नी के रूप में तथा माता के रूप में हिन्दू समाज व परिवार में 'श्री' व 'लक्ष्मी' के रूप में वह मनुष्य के जीवन में सुख और समृद्धि से दीप्त और पुंजित करने वाली कही गई।

संबोध शब्द : प्राचीन, सम्मान, आदर्शात्मक, मर्यादायुक्त, समृद्धि, परिवर्तन, प्रतिनिधित्व, विदुषी ऋचायें, ऋग्वेद, *उपनिषद,* ब्रह्मविद्या, इतिहास, प्रतीक, अग्निपुराण.

विषय प्रवेश

भारत का इतिहास अत्यंत प्राचीन रहा है जिसमें प्रमाणिक इतिहास का विवरण विशेष रूप से हड़प्पा युग से प्राप्त होता है। इस सभ्यता में बड़ी संख्या में प्राप्त होने वाली स्वी मूर्तियाँ यह इंगित करती है कि संभवतः हड़प्पा सभ्यता का समाज मातृसत्तात्मक रहा होगा। इस सभ्यता की गणना संसार की चार पुरानी सभ्यताओं में की जाती है।

वैदिक युग को दो कालखण्डों में बांटा गया है जिसमें १५०० से ६०० ई०पू० के वैदिक युग में १५०० से १००० ई०पू० ऋग्वैदिक काल और १००० से ६०० ई०पू० उत्तर वैदिक काल माना जाता है। जहाँ तक अम्वैदिक युगीन समाज की बात है ऋग्वेद में पुत्री के जन्म पर दुःखी होने का कोई उल्लेख नहीं है लेकिन पुत्र की इच्छा करना स्वाभाविक था। इस युग में कन्यायें वेदों का अध्ययन कर सकती थीं तथा उन्हें सभा व समिति जैसी संस्थाओं में प्रतिनिधित्व भी प्रदान किया गया था। गार्गी, लोपामुद्रा, विश्ववारा, घोषा, अपाला, रोमशा जैसी विदुषी कन्याओं का उल्लेख इस युग में प्राप्त होता है। यह भी माना जाता है कि अनेक ऋचायें स्वियों के द्वारा रचित्त है।

लोपामुद्रा – राजा अगस्त्य की पत्नी लोपामुद्रा एक विदुषी थीं, जिन्होंने ऋग्वेद के कई मंत्रों की रचना की। वे वेदों और ज्ञान विज्ञान में पारंगत थी। **गर्गी वाचक्नवी** – ये महान दार्शनिक एवं वेदों की ज्ञाता थीं। उन्होंने ब्रह्मविद्या पर राजा जनक के दरबार में ऋषि याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ किया था, जो *बृहदारण्यक उपनिषद* में वर्णित है। **मैत्रेयी** – वे ऋषि याज्ञवल्क्य की पत्नी थीं और आत्मा एवं ब्रह्म के रहस्यों को समझने के लिए प्रसिद्ध थीं। उन्होंने भी ब्रह्मविद्या पर महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए हैं, जो *बृहदारण्यक उपनिषद* में वर्णित हैं। **अपाला** –

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

ये ऋग्वेद की ऋषिका थीं और कई मंत्रों की रचयिता मानी जाती हैं। उन्होंने सौंदर्य, स्वास्थ्य और आध्यात्मिक चेतना पर गहन चिंतन किया था। **विश्ववारा** – वे ऋग्वेद की एक अन्य प्रमुख ऋषिका थीं, जिन्होंने कई सूक्तों की रचना की। वेदों में उनका नाम ऋषि के रूप में उल्लिखित है। **रोमशा** – वे भी एक प्रसिद्ध ऋषिका थीं, जिन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान और वेदों के अध्ययन में योगदान दिया। **शाश्वती** – इन्हें भी वैदिक काल की विदुषी माना जाता है, जो वेदों और शास्त्रों में निपुण थीं।

उत्तर वैदिक युग में गार्गी व याज्ञवल्क्य के एक संवाद का का उल्लेख मिलता है जिसमें ऋषि याज्ञवल्क्य गार्गी नामक कन्या को धमकाते हुये कहते है कि तुम मुझसे बहस न करो नहीं तो तुम्हारा सिर तोड़ दिया जाएगा। शायद यह ऋग्वैदिक युग के बाद उत्तर वैदिक युग में स्वियों की गिरती हुई दशा का सूचक माना जा सकता है। फिर भी हम यह कह सकते हैं कि वैदिक युग में महिलाओं को पर्याप्त प्रतिष्ठा प्राप्त थी। सामाजिक और धार्मिक कार्यों में उसकी स्थिति पति के समकक्ष थी। पत्नी के बिना मनुष्य अपूर्ण था। पत्नी के अभाव में यज्ञ नहीं हो सकता था। पत्नी का एक विरूद अर्द्धांगिनी है। पति के प्रति पूर्ण निष्ठा स्वी का आवश्यक गुण था।

छठवीं शताब्दी ई.पू. के इतिहास से इस बात की जानकारी होती है कि इस समय से स्वियों को दशा में और तेजी से गिरावट आनी शुरू हुई क्योंकि एक वृत्तांत मिलता है जिसमें पंचतंत्र के लेखक ने लिखा है कि पुत्री के जन्म पर पिता को बहुत चिंता होती है कि मैं इसका विवाह किस योग्य वर के साथ करूंगा। विवाह करने पर भी उसकी चिंता समाप्त नाहीं होती। वह यह जानने को उत्सुक रहता है कि उसकी पुत्री विवाहित अवस्था में सुखी रहेगी या नहीं। मनुस्मृति के अनुसार स्वी को बाल्यावस्था में पिता के, यौवनावस्था में पति के और वृद्धावस्था में पुत्र के अधीन रहना चाहिये। साथ ही मनु ने स्त्रियों के छह दूषण माने है, उन्होंने स्त्री को खेत और पुरूष को बीज निरूपित किया है। खेत और बीज के मिलने से प्राणियों की उत्पत्ति होती है। प्राचीन भारतीय महाकाव्यों में विधवा विवाह के भी उल्लेख मिलते है। रामायण में बालि की मृत्यु के बाद सुग्रीव ने उसकी विधवा तारा से विवाह किया था। कुछ उदाहरण सती के भी मिलते है महाभारत में पांडु की दूसरी पत्नी माद्री अपने दोनो पुत्र नकुल और सहदेव को कुन्ती के संरक्षण में छोड़कर अपने पति के शव के साथ सती हो गयी थी। गौतम बुद्ध के काल में समाज में स्वियों की स्थिति सराहनीय नहीं थी। बुद्ध स्वयं संघ में स्वियों के प्रवेश देने के विरुद्ध थे।

भारतीय इतिहास में एक लम्बे समयान्तराल तक स्वियों की दशा पतनावस्था की ओर जाने लगी। पुत्री की स्थिति पुत्र की तुलना में कम हो गई। कथासत्सिागर के अनुसार पुत्र सुख क्या प्रतीक ना तो पुत्री दुःख का मूल। इस युग में विधवाओं से यह अपेक्षा की जाती थी कि वे अपनी पति की स्मृति में अपना शेष जीवन संयमपूर्वक व्यतीत करें। हर्षवर्द्धन के युग में हर्ष की बहिन राजश्री के पति गृहवर्मन की हत्या उपयंत राजश्री जब सती होने जा रही थी उसी वक्त हर्ष ने उसे बचा लिया था। अग्निपुराण में उल्लिखित है कि जो स्वी अपने पति के शव के साथ अग्नि में प्रवेश करती है, वह सीधे स्वर्ग जाती है। जबकि राजपूत काल में ऐसी अनेक रानियों के नाम मिलते है जिन्होंने जहाँ एक ओर जौहर व्रत चारण किया वहीं दूसरी ओर अपने पति की मृत्यु होने पर राज्य का शासन योग्यतापूर्वक संचालित किया।

मध्यकालीन भारत की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना है भारत पर होने वाले मुस्लिम आक्रमण। इस मध्यकालीन युग को इतिहास के दो कालखण्डों में बाँटा गया है, सल्तनत काल जो १२०६ से १५२६ तका चला और मुगल काल जो १५२६ से १८५७ तक प्रभावी रहा। भारत में इस्लाम के प्रवेश के बाद हिंदू समाज में नई प्रवृत्तियों ने उभरना शुरू कर दिया। जिसमें पर्दा प्रथा मुख्य माना जा सकता है। हिन्द ओं ने अपनी स्त्रियों के

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

सम्मान की रक्षा के लिए पर्दा, महापान, दर्जनों का संग, पति से अलग गुमना, असमय प्रथा को अपनाया। मध्यकाल में लड़कियों के विवाह बाल्यावस्था में हो जाता था, विवाह के समय उनकी अवस्था ७-८ वर्ष की होती थी। वर या वधु में से किसी को अपनी पसंद के जीवन साथी चुनने का सवाल ही नहीं उठता था। विवाह तय करना माता-पिता या निकट संबंधियों का काम था। मुसलमानों में तलाक और पुनर्विवाह प्रचलित थे। हिन्दुओं में इसका निषेध था। मुगल शासकों में विशेषतः अकबर ने सती प्रथा को रोकने का प्रयास किया लेकिन चूंकि उसका आध वार धर्म से जुड़ा था इसलिये वह सफल न हो सका। फिर भी मध्य युग में हमें हुमायूँ की बहन गलबदन बेगम ने हुमायूँनामा नाम से हुमायूँ की जीवनी लिखी थी। शाहजहाँ की पुत्री जहांआरा कवयित्री थी। सलीमा सुल्ताना, नूरजहाँ और जिब्बुनिशा ने श्रेष्ठ काव्य रचना की थी। हिन्दुओं में मीराबाई, रानी दुर्गावती और ताराबाई अपने समय की विख्यात महिलाये थी। मीराबाई ने भक्ति के क्षेत्र में और रानी दुर्गावती और ताराबाई ने शासनिक और सैनिक क्षेत्र में नाम कमाया था।

आधुनिक काल में ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत संकट सिर्फ राजनीति तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि मध्य युग के मुस्लिम शासन काल में भारत ने अपने अतीत के वैभव को विस्मृत कर दिया। इस समय गीता, उपनिषद् और वेदांत की शिक्षायें लोगों के समझ से बाहर की बात हो गयी थी। समाज के प्रायः अनेक अंग लकवाग्रस्त स्थिति में पहुंच गये थे। ऐसे में भारत में हुये पुनर्जागरण आन्दोलन के आरंभ होने से एक नये युग का सूत्रपात हुआ। १९ वी सदी में भारतीय नवजागरणा के लिए यदि किसी एक तत्व को सबसे अधिक श्रेय दिया जा सकता है, तो वह है अंग्रेजी शिक्षा का आरंभ जिसने भारत में एक वैचारिक क्रांति का शंखनाद किया। अंग्रेजी शिक्षा के माध्यम से भारतीयों में पाश्चात्य विचारों और संस्थाओं से संपर्क स्थापित हुआ। उन्हें यह ज्ञात हुआ कि सभ्यता की दौड़ में उनका अपना देश कितना पीछे हो गया है। इस वैचारिक प्रक्रांति के दौर में ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन, नियोसाफिकल सोसायटी, अलीगढ़ आन्दोलन और उसके नेतृत्वकर्ताओं ने भारत की सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया और उन्हें समाज की मुख्य धारा में लाने की कोशिश की।

भारतीय नारी जागरण के संदर्भ में राजाराममोहन रॉय, स्वामी दयानंद सरस्वती और स्वामी विवेकानंद तथा ईश्वरचंद्र विद्यासागर का योगदान को विशेष रूप से रेखांकित किया जाना गाहिये। राजा राममोहन रॉय के प्रयासों से १८२९ में सती प्रथा को लार्ड विलियम बैटिंक के द्वारा गैरकानूनी घोषित किया गया। दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज के माध्यम से वेदों की ओर लौटो' का नारा दे स्वियों की दशा को उताने का कार्य किया। ईश्वरचंद्र विद्यासागर के प्रयासों से विधवा पुनर्विवाह अधिनियम १८५६ में पारित किया गया। दूसरी ओर स्वामी विवेकानंद ने स्वी शिक्षा का प्रबल समर्थन किया। स्वामी विवेकानंद के अनुसार नारी का वास्तविक स्वरूप माँ का है। उनके अनुसार, "भारतके सभी स्त्री प्रकारों में माँ सबसे उपर है। माँ सब बातों में संतान का साथ देती है। पत्नी और संतान मनुष्य को त्याग सकती है पर माँ कभी नहीं त्यागती।" भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में गांधीवादी आन्दोलन के दौरान महिलाओं ने सक्रियतापूर्वक राजनीति में सहभागिता को प्रदर्शित करना शुरू किया। गांधी जी के द्वारा संचालित आंदोलन ने महिलाओं में अभूतपूर्व जागृति उत्पन्न की। कस्तूरबा गांधी, कमला नेहरू, विजय लक्ष्मी पण्डित, सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपलानी, मीरा बेन जैसी अनेकानेक महिलाओं ने राष्ट्रीय आन्दोलन में हिस्सा लिया। नारी को परंपरा से अबला कहा गया है। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा-

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: 2168-2259 (online)
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

आंचल में है दूध और आंखो में पानी।

परंतु महात्मा गांधी नारी को अबला नहीं मानते। उनके विचार में स्वी को अबला कहना उसका अपमान करना है। नारी में सहन शक्ति और धैर्य के अतिरिक्त श्रद्धा का गुण भी विशेष रूप से पाया जाता है। जयशंकर प्रसाद ने नारी को साक्षात् 'श्रद्धा' कहा है।

नारी तुम केवल श्रद्धा हो,

विश्वास रजत पग नग तल में।

पीयूष स्रोत सी बहा करो,

जीवन के सुंदर समतल में।।

इनने स्त्रियों की समस्याओं की और भी ध्यान दिया गांधी जी जीवन में श्रद्धा के बड़े पक्षधर थे। वे श्रद्धा को धर्म का मूल मानते थे। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में रानी लक्ष्मीबाई से लेकर स्वाधीनता तक अनेकानेक वीरांगनाओं के योगदान की एक लंबी फेहरिस्त है जिनमें भगवतीचरण वोहरा की पत्नी दुर्गा भाभी ने क्रांतिकारियों की भरपूर मदद की वहीं बीना दास, मातंगिनी हजारा, कनकलता ने भी नारी जगत के लिए मिसाल पेश किया। स्वाधीनता के पश्चात स्त्री समानता के सिद्धांत का अवलंबन किया गया। भारतीय संविधान ने स्त्री और पुरूष को बराबर का दर्जा प्रदान किया। समयान्तराल में नारी का मान सम्मान व दर्जा समाज में उच्च स्तर पर है।

निष्कर्ष

१. भारत के इतिहास में नारी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। सभ्यता के आरंभ से लेकर आधुनिक काल तक भारतीय समाज में नारी शक्ति को सम्मान, आदर और विविध भूमिकाओं में देखा गया है। हालांकि, समय के साथ नारी की स्थिति में बदलाव आए हैं - कभी वह समाज की धुरी बनी, तो कभी उसे उपेक्षित भी किया गया।

२. वैदिक काल में महिलाओं को उच्च स्थान प्राप्त था। वे शिक्षा, धर्म, राजनीति और समाज के अन्य क्षेत्रों में स्वतंत्र रूप से भाग लेती थीं। गार्गी, मैत्रेयी और अपाला जैसी विदुषियाँ वेदों के अध्ययन और चिंतन-मनन में संलग्न थीं। इस काल में विवाह, संपत्ति अधिकार और शिक्षा में महिलाओं की स्थिति सशक्त थी।

३. मध्यकाल में विदेशी आक्रमणों और सामाजिक संरचना में बदलाव के कारण महिलाओं की स्थिति कमजोर हुई। पर्दा प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह और शिक्षा से वंचित किए जाने जैसी प्रथाएँ प्रचलित हो गईं। हालांकि, इस युग में भी रानी दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई और चांदबीबी जैसी वीरांगनाओं ने समाज में अपनी शक्ति और नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया।

४. औपनिवेशिक काल में महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए कई समाज सुधारक आगे आए। राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, ज्योतिबा फुले और महात्मा गांधी ने महिलाओं की शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह, सती प्रथा उन्मूलन और महिला अधिकारों के लिए कार्य किया। स्वतंत्रता संग्राम में भी सरोजिनी नायडू, अरुणा आसफ अली, कस्तूरबा गांधी जैसी महिलाओं की अहम भूमिका रही।

५. आज के भारत में नारी हर क्षेत्र में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करा रही है। राजनीति, विज्ञान, खेल, व्यवसाय, कला, मीडिया आदि में महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। सरकारी योजनाओं और कानूनों, जैसे कि

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', महिलाओं के लिए आरक्षण, कार्यस्थल पर सुरक्षा कानून आदि ने महिलाओं की स्थिति को सशक्त किया है।

६. भारतीय इतिहास में नारी की यात्रा संघर्ष और उपलब्धियों से भरी रही है। जहां प्राचीन काल में उसे गौरव प्राप्त था, वहीं मध्यकाल में वह अनेक बंधनों में जकड़ी गई, लेकिन आधुनिक युग में वह पुनः अपनी गरिमा को प्राप्त कर रही है। आज आवश्यकता है कि नारी सशक्तिकरण को और अधिक बल दिया जाए, ताकि वह समाज में समानता और सम्मान के साथ आगे बढ़ सके।

संदर्भ ग्रंथ

१. शरण डी. के. "भारतीय इतिहास में नारी, शौर्य प्रकाशन, नई दिल्ली-२००७, पृ. क्र. १५
२. गुप्त विश्व प्रकाश एवं गुप्त मोहिनी, “स्वतंत्रता संग्राम और महिलाएं”, पंकज प्रकाशन, दिल्ली, २००८, पृ. क्र. ६८
३. बिपिन चन्द्र, “भारत का स्वतंत्रता संघर्ष", हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निर्देशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, २०१५, पृ. क्र. ३६
४. ग्रोवर एवं यशपाल, "आधुनिक भारत", एस.चांद प्रकाशन, नई दिल्ली-२०११, पृ. क्र. ५२
५. वोहरा आशारानी, "भारत की अग्रणी महिलायें" दिल्ली-१९८७
६. गुप्त मैथिलीशरण, “यशोधरा”,)1933(
७. ई-पुस्तकालय - https://epustakalay.com/book/28388-yashodhara-by-maithili-sharan-gupt/#google_vignette
८. प्रसाद जयशंकर, “कामायानी”, राजपाल एंड संस, दिल्ली, २००९, पृ. क्र. १६
९. www.indianwomensjourney.co.in

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved